ORIGINAL RESEARCH PAPER

हिन्दी

KEY WORDS:

हिन्दी में तत्सम-तद्भव शब्द

मुकेश चन्द शोध छात्र, हिन्दी विभाग, महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय, भरतपुर (राज0)

ABSTRACT

हिन्दी भाषा का मूल-स्रोत संस्कृत भाषा है। इसलिए हिन्दी शब्द भण्डार में संस्कृत शब्दों तथा उनसे विकसित शब्दों का पर्याप्त योगदान रहा है। इन्हीं को तत्सम तथा तद्भव शब्द कहा गया है। हिन्दी की व्याकरण पुस्तकों व ग्रंथों में विद्वानों ने तत्सम व तद्भव शब्दों को काफी मात्रा में प्रस्तुत किया है, परन्तु उनको अलग-अलग पहचानने के नियम अभी तक विकसित नहीं किए जा सके हैं। अतः उक्त शोध आलेख में यह कार्य करने का स्तुल्य विनम्र प्रयास किया गया है।

शोध पत्र

भाषा मानव जीवन की प्राचीनतम उपलब्धि है। भाषा का अध्ययन भारत में भी चिरकाल से होता आ रहा है। संस्कृत हिन्दी भाषा की जननी है। अर्थात् हिन्दी का मूल स्रोत संस्कृत है– वैदिक>संस्कृत>पालि>प्राकृत>अपभ्रंश तथा हिन्दी। मूल स्रोत का अर्थ है– मूल उद्गम या उत्पत्ति। वस्तुतः हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। इसलिए हिन्दी शब्द-भण्डार पर संस्कृत की अमिट छाप है। स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्दों के दो प्रमुख रूप हैं– (1) तत्सम शब्द और (2) तद्भव शब्द।

हिन्दी तत्सम शब्द– किसी भाषा के मूल शब्द को 'तत्सम शब्द' के नाम से अभिहित किया जाता है। 'तत्सम' शब्द 'तत्+सम' के योग से बना है। 'तत्' का अर्थ है– वह (उसके) और 'सम' कर अर्थ है– समान (ज्यों का त्यों)। 'तत्सम' का अर्थ हुआ– उसके समान या ज्यों का त्यों। यहाँ 'तत्' (उसके) का मतलब है– संस्कृत। अर्थात् जो संस्कृत के समान हों अथवा संस्कृत जैसे हों। कामताप्रसाद गुरु के शब्दों में– "तत्सम वे शब्द हैं जो अपने असली स्वरूप में हिन्दी भाषा में प्रचलित हैं।" ('हिन्दी व्याकरण', पृष्ठ.27) वस्तुतः तत्सम वे शब्द हैं जो संस्कृत भाषा से बिना किसी ध्वनि-परिवर्तन के मूल रूप से हिन्दी में ज्यों-के-त्यों आ गए हैं। हिन्दी में ऐसे 75 प्रतिशत हैं। उदाहरणार्थ–कृष्ण, गृह, कर्म, हस्त, धर्म, घट आदि।

हिन्दी तद्भव शब्द– 'तद्भव' शब्द 'तत्+भव' के योग से बना है। 'तत्' का अर्थ है– वह (संस्कृत) और 'भव' का अर्थ है– उत्पन्न। अर्थात् वह शब्द जो संस्कृत (तत्सम) शब्दों से उत्पन्न हुए हैं। डॉ0 भोलाराम तिवारी के शब्दों में– "ये संस्कृत या तत्सम शब्दों के ध्वनि की दृष्टि से विकसित, परिवर्तित अथवा विकृत रूप हैं।" ('हिन्दी भाषा', पृष्ठ.182) वस्तुतः तद्भव वे शब्द हैं जो संस्कृत से ही आए हैं, परन्तु हिन्दी में आने पर इनका स्वरूप बदल गया है। ये शब्द संस्कृत से सीधे न आकर पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं से होकर हिन्दी में आये हैं। उदाहरण के लिए –

तत्सम	तद्भव
कृष्ण	कान्ह
गृह	घर
घट	घड़ा
हस्त	हाथ
धम	धरम
कर्म	काम

तत्सम एवं तद्भव शब्दों की पहचान

तत्सम एवं तद्भव शब्दों की पहचान अभ्यास का विषय है। फिर भी कुछ ऐसे नियम निश्चित किये जा सकते हैं, जिनकी सहायता से एक सीमा तक इन शब्दों की पहचान सम्भव हो सकती है। यथा –

(1) जिस शब्द में चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग हो, वह निश्चय ही तद्भव शब्द होगा। जैसे–

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
आँसू	अश्रु	आँवला	आमलक
आँख	अक्षि	गँवार	ग्रामीण/ग्रामकार
कुआ	कूप	भौंरा	भ्रमर

टिप्पणी–1. यदि चन्द्रबिन्दु के विपरीत शब्द में अनुस्वार (ं) अथवा पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) का प्रयोग हो, तो वह तत्सम शब्द होगा। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अंगरक्षक	अँगरखा	अंक	आँक
अंधकार	अँधेरा	कंटक	काँटा
चन्द्र	चाँद	बंध	बाँध

2. परन्तु कभी.कभी तत्सम एवं तद्भव दोनों शब्दों में अथवा केवल तद्भव में ही अनुस्वार का प्रयोग पाया जाता है। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
एरंडी	अंडी	ननांदृपति	नंदोई
अन्ध	अन्धा	पंक्ति	पंगत
कंकण	कंगन	पक्षी	पंछी
कंकती	कंघी	पक्ष	पंख
दंश	डंक	नग्न	नंग/नंगा

(2) यदि क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, शृ, ऋ, द्य (दय) जैसे संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग शब्द में हुआ हो, तो वह सदैव तत्सम होगा। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	गृह	घर
श्रावण	सावन	ऋक्ष	रीछ
चित्रक	चीता	घृत	घी
कीदृश	कैसा		

टिप्पणी– 'ऋ' वर्ण का प्रयोग केवल तत्सम शब्दों में ही होता है, 'ऋ' ध्वनि हिन्दी में समाप्त हो चुकी है।

(3) तत्सम शब्दों मे आये कुछ वर्णों का तद्भव शब्दों में निम्नवत् रूप में परिवर्तन हो जाता है– क्ष–छ/च्छ / ख, ज्ञ–ज, त्र–त, य–ज, शृ/श्र–स। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
क्षेत्र	खेत	योगी	जोगी
नक्षत्र	नखत	युक्ति	जुक्ति/जुगति
अक्षर	आखर/अच्छर	यजमान	जजमान
श्राप	साप	ज्ञान	जान
क्षति	छति	श्रेष्ठि	सेठ

(4) यदि तालव्य 'श' का प्रयोग हुआ हो, तो तत्सम और दन्त्य 'स' का प्रयोग हुआ हो, तो वह तद्भव शब्द होगा। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
दश	दस	स्पर्श	परस
आदेश	आयसु	आश्विन	आसोज (आसिन)
परशु	फरसा	शाक	साग
शिर	सिर	शिला	सिल
शीर्ष	सीस	शून्य	सुन्न

(5) यदि 'व' वर्ण से प्रारम्भ हुआ हो, तो वह तत्सम और 'ब' से प्रारम्भ हुआ हो, तो वह तद्भव शब्द होगा। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
वधू	बहू	वानर	बंदर
वर्कर	बकरा	वर्धन	बढ़ना
वत्स	बच्चा/बछड़ा	वासगृह	बसेरा
वरयात्रा	बारात	वामन	बौना
वचन	बैन	वृश्चिक	बिच्छू

अपवाद–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
बालुका	बालू	बलीवर्द	बैल
बिन्दु	बिंदी	बदरी	बेर
बहिर	बाहर	बिल्व	बेल
असौ	वह	विक्षोभ	विछोह

(6) यदि 'र' वर्ण किसी शब्द के ऊपर (रेफ) या नीचे आए, तो वह तत्सम शब्द ही होगा। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
धर्म	धरम	कर्म	करम/काम
नर्म	नरम	चक्रवाक	चकवा
आम्र	आम	उष्ट्र	ऊँट
कर्पट	कपड़ा	खर्जूर	खजूर
गदर्भ	गधा		

(7) यदि तत्सम शब्द 'स्थ'/'स्त' से प्रारम्भ हो, तो तद्भव में उसके स्थान पर केवल 'थ'/'स' वर्ण ही रह जाता है। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
स्थिर	थिर	स्तन	थन
सलि	थल	सीन	थान/ठाँव
स्तम्भ	थंभ	स्तम्भन	थामना
स्तोक	थोड़ा	सुस्थिर (सु:स्थिर)	सुथर

टिप्पणी– 1. कभी.कभी यह नियम शब्द के मध्य में आए वर्ण पर भी लागू हो जाता है। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
पुस्तिका	पोथी	हस्त	हाथ
हस्ती	हाथी	हस्त	हथौड़ा

2. कभी.कभी 'स्' वर्ण का तद्भव रूप में 'स' अथवा लुप्त हो जाता है। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
आलस्य	आलस	उत्साह	उछाह
कांस्यकार	कसेरा	कस्स	किस
स्पर्श	परस	स्फटिक	फअकरी
स्फुटन	फूटना	स्वर्णकार	सुनार
हास्य	हँसी	अस्थि	हड्डी

3. कभी.कभी तत्सम शब्द में आए हुए 'ष्'/'ष' का तद्भव में 'स' या लोप हो जाता है। जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव

अग्निष्ठिका	अँगीठी	अँगुष्ठ	अँगूठा
अष्टक्रीडा	अठखेली	अष्टादश	अठारह
अषाढ़	असाढ	आशीष	आसीस
अष्ट	आठ	कृषाण/कृषक	किसान
पृष्ठ	पीठ	वेष	भेस
कृष्ण	किसन		

(8) तत्सम शब्द 'थ' वर्ण से और तद्भव शब्द 'य'/'व' वर्ण से कभी.भी प्रारम्भ नहीं होते। परन्तु कुछ अपवाद मिल जाते हैं। जैसे–

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
एष	यह	असौ	वह
अत्र	यहाँ	विक्षोभ	विछोह/वियोग
एवम्	यों	थुत्कार/थूत्कार	थूकना

(9) अधिकांशतः आधू.अधूरे एवं संयुक्त वर्णों का प्रयोग तत्सम शब्दों में ही होता है। जैसे–

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अनुत्थ	अनूठा	उड्डु	उड़
अलग्न	अलग	उद्वर्तन	उबटन
कोऽपि	कोई	गर्गर	गागर
चञ्चु	चोंच	चतुष्षष्ठि	चौंसठ
दृष्टि	डीठ	तिरश्च	तिरछा
नप्तृ	नाती	द्विसृत	दूसरा
पश्चात्	पीछे	पार्श्व	पास
पृच्छन	पूछना	वन्ध्या	बाँझ
भ्रातृव्य	भतीज	मृत्तिका	मिट्टी
मंजिष्ठ	मजीठ	अभ्यन्तर	भीतर
श्वश्रृ	सास	सार्द्ध	साढ़े
शिम्बा	सेम	अधःस्थिति	हेठी

नोटः– ज्ञातव्य है कि चन्द्रबिन्दु (ँ) संस्कृत में भी प्रचलित था, किन्तु चन्द्रबिन्दु.युक्त संस्कृत (तत्सम) शब्द हिन्दी में ग्रहण नहीं हुए हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. 'व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना', डॉ. हरदेव बाहरी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं..2002
2. 'बृहत व्याकरण भास्कर', डॉ. वचनदेव कुमार, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना
3. 'हिन्दी: शब्द.अर्थ.प्रयोग', डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, सं.2009
4. 'प्रामाणिक सामान्य हिन्दी', डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, यूनीक पब्लिकेशन्स, दिल्ली
5. 'हिन्दी व्याकरण', कामताप्रसाद गुरू, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं.2010
6. 'शुद्ध हिन्दी कैसे सीखें', राजेन्द्र प्रसाद सिन्हा, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना
7. 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना', डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद, भारती भवन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, सं..2012
8. 'हिन्दी भाषा', डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाबाद, सं..1999
9. 'संस्कृत हिन्दी शब्दकोश', वामन शिवराम आप्टे, नीलकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. 'आदर्श हिन्दी शब्दकोश', भार्गव बुक डिपो, वाराणसी, सं..2001
11. 'हिन्दी शब्दकोश', डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली